A+B,

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'अ' (उत्तराखण्ड) 12 पन्ने
	...उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना

उत्तर

खण्ड (अ)

उत्तर 1

क. (iv) ये सभी

ख. (i) $MU_n = TU_n - TU_{(n-1)}$

ग. (ii) बाँये से दाँये नीचे की ओर

घ. (ii) कीमत को स्वीकार करती है,

ङ. (ii) A तथा R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता,

उत्तर 2 मिश्रित अर्थव्यवस्था

उत्तर 3 $P_1x_1 + P_2x_2 = M$

उत्तर → 3 विधियाँ

1 – प्रतिशत विधि

2 – ज्यामितिय विधि / बिंदु विधि

3 – चाप विधि

उत्तर

खण्ड (अ)

उत्तर 1

क. (iv) ये सभी

ख. (i) $MU_n = TU_n - TU_{(n-1)}$

ग. (ii) बाँये से दाँये नीचे की ओर

घ. (ii) कीमत को स्वीकार करती है,

ङ. (ii) A तथा R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता,

उत्तर 2 मिश्रित अर्थव्यवस्था

उत्तर 3 $P_1x_1 + P_2x_2 = M$

उत्तर 4 → 3 विधियाँ

1 – प्रतिशत विधि

2 – ज्यामितिय विधि / बिंदु विधि

3 – चाप विधि

उत्तर 5

परिवर्ती अनुपात का नियम ⇒ यह नियम अल्पकाल से संबंधित है जब किसी एक साधन की मात्रा को स्थिर रखते हुए अन्य परिवर्तनशील साधनों की मात्रा में परिवर्तन किया जाता है। परिवर्ती अनुपात का नियम कहलाता है।

1. बढ़ते प्रतिफल की अवस्था
2. घटते प्रतिफल की अवस्था
3. ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था।

उत्तर 6

कुल परिवर्ती लागत (TVC) से आशय उस लागत से है जो परिवर्तनशील साधनों को उत्पादन में लायी जाने वाली लागत है।
कुल परिवर्ती लागत की मात्रा उत्पादन में वृद्धि होने पर बढ़ती है तथा उत्पादन में कमी के फलस्वरूप घटती है।

$$TVC = TC - TFC$$

उत्तर 7

सीमांत उत्पादन संभावना ⇒ से आशय दो वस्तु X और Y के उत्पादन की उन सभी संयोगों को दिखाता है जो पूर्ण रोजगार की स्थिति में साधन तथा तकनीक दिए होने पर संभव है।

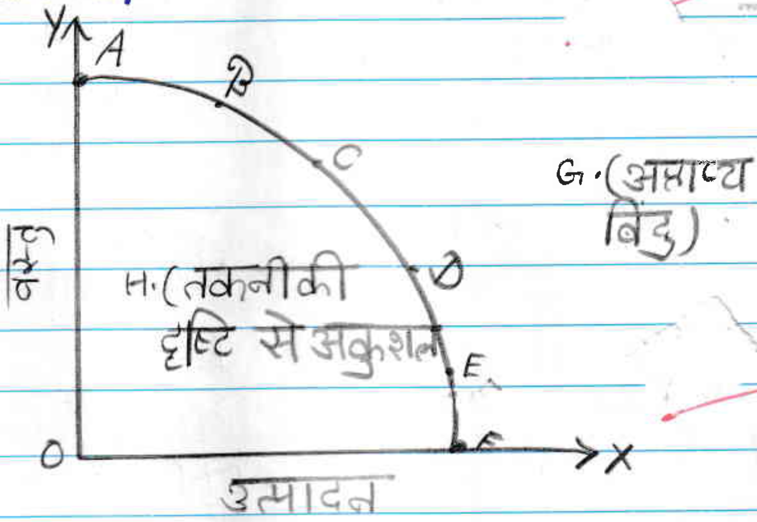

उत्तर 8

पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार के लक्षण :=>

1. क्रेता तथा विक्रेताओं की संख्या अधिक
2. कीमत स्वीकारक
3. समरूप वस्तुओं का विक्रय
4. क्रेता तथा विक्रेता को पूर्ण ज्ञान
5. बाजार में आगमन तथा बहिर्गमन की स्वतंत्रता

उत्तर 1

अंधिमान वक्र :⇒ अंधिमान या फिर तटस्थता वक्र से आशय उस वक्र तथा संयोग से है जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि देते हैं। अधिमान वक्र कहलाता है।

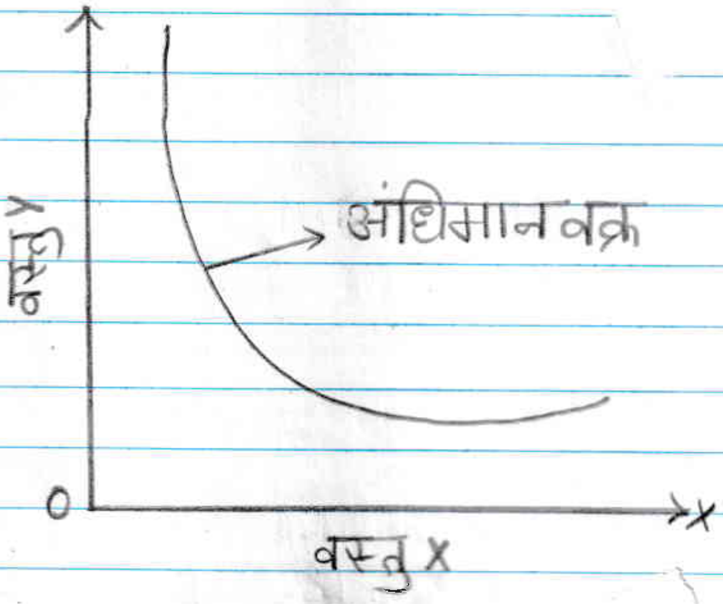

अंधिमान वक्र की विशेषताएँ

~~दाएँ से बाएँ~~ बाएँ से दाएँ की ओर बनता है
ऊपर से नीचे की ओर बनता है।
वस्तु X तथा Y के उत्पादन के अनुपात को बताती है।
मूल बिंदु की ओर नतोदर होती है।
उस उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करता है।
~~उत्पादन से~~
अधिमान वक्र की प्रवणता नीचे होने के कारण :⇒ अधिमान वक्र दो वस्तुओं X

और Y के ऐसे संयोगों को दिखाती है जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करते हैं। चूँकि अधिमान वक्र दो वस्तुओं के समान संयोगों को दिखाती है अर्थात यदि X वस्तु की मात्रा को बढ़ाया जाए तो Y की मात्रा को घटना पड़ेगा इसके विलोमश: भी अत: X तथा Y के प्रतिस्थापन अनुपात के कारण अधिमान वक्र नीचे की ओर बनता है। इसकी प्रवणता नीचे की ओर होती है।

उत्तर 10

माँग की कीमत लोच : ⇒ माँग का नियम यह बताता है कि कीमत के बढ़ने पर माँग घटती है तथा कीमत के घटने पर माँग बढ़ती है। लेकिन यह नियम केवल दिशा को बताता है। यह नियम यह नहीं बताता कि कीमत में परिवर्तन होने के कारण माँग में कितना परिवर्तन होता है अत: माँग की कीमत लोच कीमत में होने वाले परिवर्तन के उत्तर में माँग में परिवर्तन है।

$$(Ed) = \frac{\text{माँग में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

{माँग की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व}

1⇒ वस्तु की प्रकृति / स्वभाव

सामान्यत: आवश्यक वस्तुओं की माँग बेलोचदार होती हैं अर्थात उन पर कीमत का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
विलासिता की वस्तु की माँग लोचदार होती है अर्थात कीमत का प्रभाव माँग पर पड़ता है।

2⇒ वस्तु की कीमत :⇒

सामान्यत: जिन वस्तु की कीमत कम होती हैं उनकी माँग बेलोचदार होती है। और जिनकी कीमत अधिक होती है उनकी माँग अत्यधिक लोचदार होती है।

3⇒ उपभोक्ता की आय

उच्च वर्ग धनी वर्ग के लिए वस्तु की माँग बेलोचदार होती है।
श्रमिक वर्ग के लिए वस्तु की माँग लोचदार होती है।

उत्तर 11

पैमाने का प्रतिफल

पैमाने के प्रतिफल से आशय सभी साधनों को परिवर्तशील अर्थात किसी भी साधन को स्थिर न रखते हुए सभी साधनों की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन से है।

पैमाने की प्रतिफल की अवस्थाएँ
बढ़ते प्रतिफल की अवस्था
स्थिर प्रतिफल की अवस्था
घटते " "

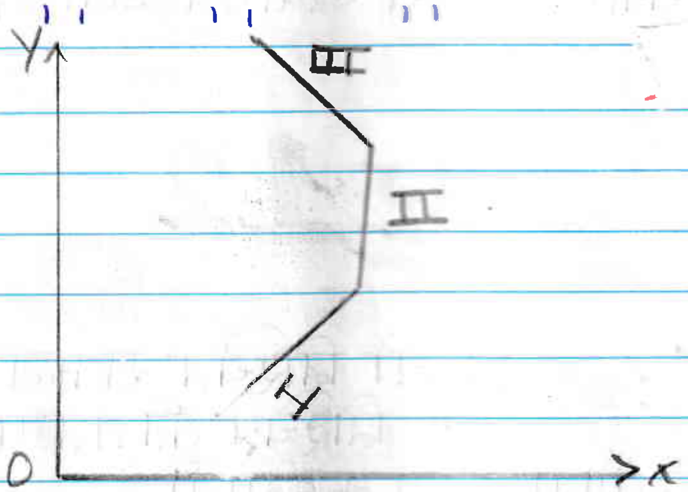

पैमाने के बढ़ते प्रतिफल के कारण :⇒

प्रो॰ चैम्बरलिन के अनुसार पैमाने के बढ़ते प्रतिफल के कारण तकनीक में नवप्रवर्तन है।

दूसरा कारण श्रम विशिष्टीकरण अर्थात श्रम में गतिशीलता तथा विशिष्ट विभाजनता है।

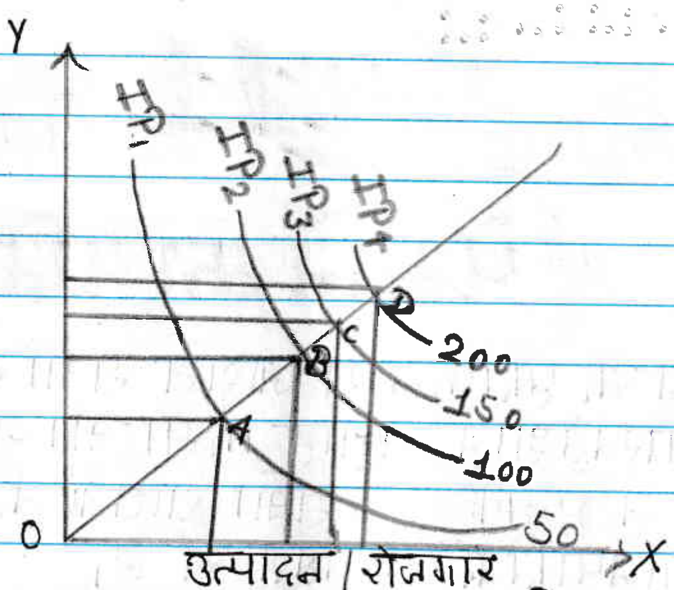

पैमाने / उत्तपादन का बढ़ता प्रतिफल

CD < BC < AB

अर्थात उत्पादन के पैमाने को क्रमशः समान वृद्धि करने से समान दर से उत्पादन होता है।

उत्तर 12

माँग :=> किसी निश्चित समय तथा निश्चित कीमत पर माँगी गई मात्रा माँग कहलाती है।

माँग तालिका :=> विभिन्न कीमतों पर माँगी गई वस्तु की विभिन्न मात्राओं को दर्शाने पर माँग तालिका का निर्माण होता है।

कीमत	मात्रा
5	15
10	10
15	5

माँग तालिका और माँग वक्र :=>

माँग तालिका में प्रदर्शित अंकों को यदि एक चित्रात्मक रूप दे दिया जाए तो माँग वक्र का ~~निमाम~~ निर्माण होता है।

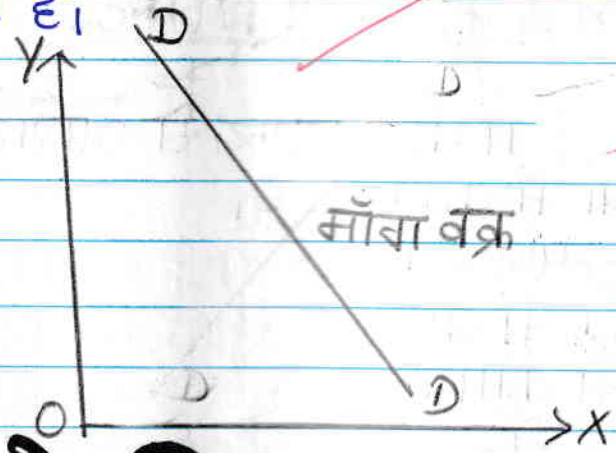

माँग में शिफ्ट

माँग वक्र में दो प्रकार से शिफ्ट होता है,

1 माँग वक्र में दाँयाँ शिफ्ट

2 माँग वक्र में बाँया शिफ्ट

1→ माँग वक्र में दाँया शिफ्ट

माँग वक्र में दाँयाँ शिफ्ट अर्थात माँग की मात्रा में वृद्धि।

चित्र से स्पष्ट है कि माँग वक्र में दाँयी ओर शिफ्ट करने से कीमत P बढ़कर P_1 हो जाती है

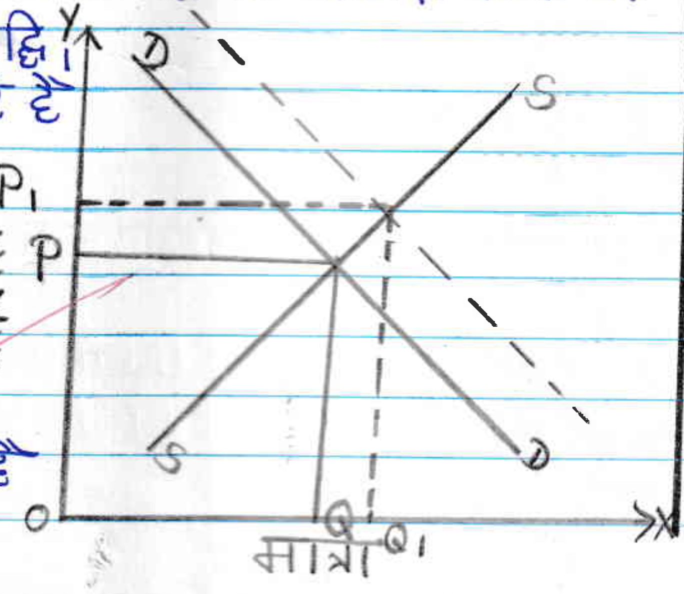

तथा मात्रा भी बढ़कर Q से Q_1 हो जाती है।

प्रभाव :⇒ माँग में दाँयी ओर शिफ्ट से कीमत बढ़ जाती है।

माँग वक्र में बाँया शिफ्ट

माँग वक्र में बाँये शिफ्ट से आशय माँग की मात्रा में कमी से है।

चित्र से स्पष्ट है कि माँग वक्र में बाँए शिफ्ट से कीमत घटकर P से P_1 तथा मात्रा घटकर Q से Q_1 हो जाती है।

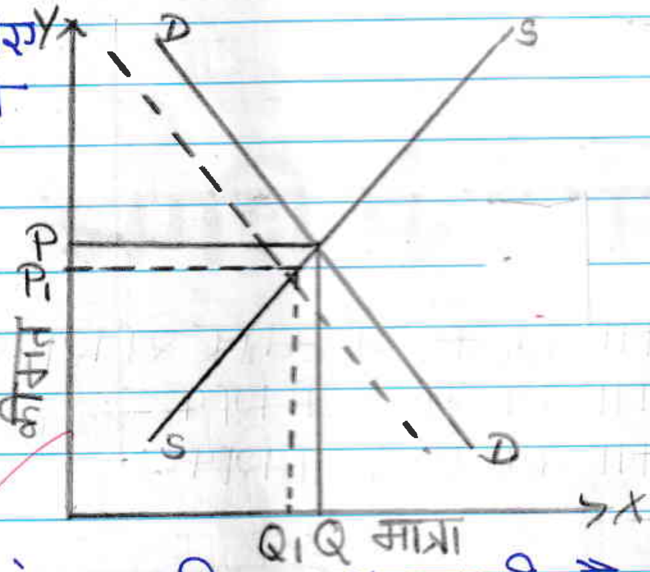

प्रभाव :⇒ संतुलन कीमत घट जाती है। मात्रा में भी कमी।

		कुल T.P	A.P
		3	3
		8	4
		15	5
		20	~~4.6~~ 5
		23	~~4~~ 4.6
		24	4

उत्तर 13

L	MP_L	TP_L	AP_L
1	3	3	3
2	5	8	4
3	7	15	5
4	5	20	5
5	3	23	4.6
6	1	24	4

उत्तर 14

{पूर्ण प्रतिस्पर्धी श्रम बाजार में मजदूरी दर का निर्धारण}

पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में मजदूरी दर का निर्धारण उस बिंदु पर होता है जहाँ श्रम की माँग तथा श्रम की पूर्ति उसे उसके प्रतिच्छेदन बिंदु पर काटता है।

श्रम की माँग :=> श्रम की माँग उत्पादकों द्वारा की जाती है। उत्पादक ऊँची मजदूरी दर पर श्रमिकों की माँग कम तथा कम मजदूरी दर पर श्रमिकों की माँग अधिक करते है। अत: उत्पादन के लिए श्रमिकों की माँग उनकी मजदूरी दर पर की जाती है।

श्रम की पूर्ति :=> उत्पादन के लिए श्रमिकों का होना आवश्यक है श्रम की पूर्ति श्रमिकों द्वारा की जाती है प्राय: अधिक श्रम की मजदूरी पर अत्यधिक श्रमिक काम करने को इच्छुक होते है तथा कम मजदूरी दर पर कम

श्रमिक कार्य करने को तैयार होते हैं।

श्रम बाजार में मजदूरी दर का निर्धारण

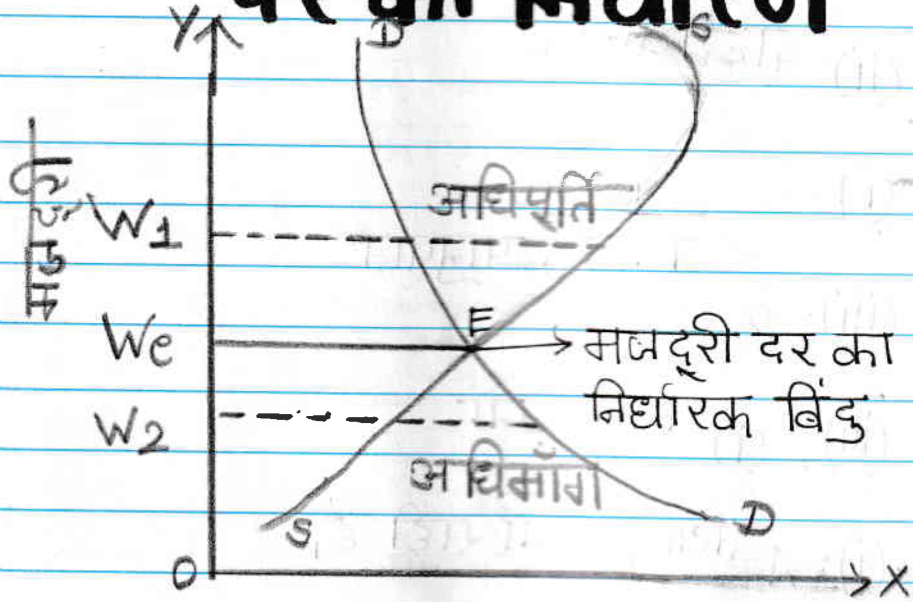

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि मजदूरी दर का निर्धारण अप उस बिंदु पर निर्धारित होगा जहाँ D (श्रम की माँग) S (श्रम की पूर्ति) को उसके प्रतिच्छेदन बिंदु पर काटता है।

We = मजदूरी दर का निर्धारक बिंदु

W_1 मजदूरी दर निर्धारित नहीं हो सकती क्योंकि W_1 श्रम की अधिपूर्ति तथा W_2 श्रम की अधिमाँग को दर्शाता है।

अतः S (श्रम की पूर्ति) D (श्रम की माँग को ~~Eq~~ We प्रतिच्छेदित करता है अतः We पर पूर्ण प्रतिस्पर्धी श्रम बाजार में मजदूरी दर निर्धारित होगी।

खण्ड (ब)

उत्तर 15

क. (ii) दोहरी गणना

ख. (i) $\frac{1}{\text{नकद कोषानुपात}}$

ग. (iii) 2

घ. (iii), (i) व (ii) दोनों

ङ. (i) A तथा R दोनों सही हैं,

उत्तर 16

An Inquiary into the Nature and Causes of Wealth of Nations

उत्तर 17

$$APS = \frac{S}{Y}$$

उत्तर 18

प्रत्यक्ष कर

उत्तर 19

मुद्रा के प्रमुख कार्य :⇒

विनिमय का सर्वमान्य माध्यम है।
लेखा की इकाई का आधार है।
मूल्य मापन का आधार के रूप में कार्य करता है।

उत्तर 20

निवेश :⇒ निवेश से आशय किसी व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति की पूँजीगत संपदा खरीदी जाती है तथा उसमें अपने संपत्ति को डाला जाता है यह निवेश कहलाता है।

निवेश निवेश में परिवर्तन के फलस्वरूप आय की अंतिम वृद्धि है

निवेश गुणक $(k) = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$

उत्तर 21

अवमूल्यन ⇒ किसी देश की सरकार या केन्द्रीय बैंक द्वारा अन्य विदेशी मुद्रा की तुलना में अपनी घरेलू मुद्रा के मूल्य में जानबूझकर की गई कटौती है।

मूल्यह्रास ⇒ उत्पादन के दौरान कुछ मशीनें टूट या फूट जाती हैं उनके मरम्मत में जो व्यय होता है उसे मूल्यह्रास कहते हैं।

उत्तर 22

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति ⇒ आय में परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोग में परिवर्तन है।

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

सीमांत बचत प्रवृत्ति से संबंध ⇒

$$MPC + MPS = 1$$

उत्तर 23

रेपो रेट ⇒ जिस दर पर केन्द्रीय बैंक (R·B·I) व्यावसायिक बैंकों की प्रथम प्रतिभूति को पुन: भुनाने के लिए ऋण देती है वह दर रेपो रेट अथवा बैंक दर कहलाती है।

अर्थात R·B·I के कॉमर्शियल बैंक को ऋण देने में जो ब्याज दर लेती है उसे बैंक दर कहते हैं।

उलट रेपो रेट ⇒ उलट रेपो रेट से आशय रेपो रेट का उल्टा है। अर्थात जिस दर पर व्यावसायिक बैंक अपनी बचत रिजर्व बैंक (R·B·I) के पास रखती है। तथा ब्याज लेती है।

→

उत्तर 26

राष्ट्रीय आय = GDP(MP) + विदेशों से प्राप्त आय – शुद्ध ~~त्त्व~~ अप्रत्यक्ष कर – मूल्य ह्रास

850 = 1100 + 100 – 150 – मूल्य ह्रास

मूल्य ह्रास = 1100 + 100 – 150 – 850
= 200 करोड़

उत्तर 23 शेष

उलट रेपो रेट :=> उलट रेपो रेट से आशय यह दर है जब व्यावसायिक बैंक अपनी जमा को R.B.I में रखती है तथा ब्याज अर्जित करती है।

वह दर जिस दर पर भारतीय रिजर्व बैंक (R.B.I) व्यावसायिक बैंको को उनकी बचत R.B.I में जमा करवाने पर ब्याज देती है। उलट रेपो रेट कहलाता है।

उत्तर 24

स्टॉक :=> स्टॉक से आशय किसी वस्तु की उस निश्चित मात्रा के उपलब्ध होने से है जो किसी विशेष समय पर उपलब्ध मात्रा होती है।

प्रवाह :=> प्रवाह से आशय किसी वस्तु के किसी विशेष समय पर प्रवाह अर्थात उतार-चढ़ाव से है। जो किसी समय पर उतारचढ़ाव करती है। वह प्रवाह कहलाता है। इसे एक निश्चित समय में चलन से है।

निवल निवेश और पूँजी में निवल निवेश प्रवाह है तथा पूँजी स्टॉक है।

निवल निवेश => यह एक प्रवाह अवधारणा है जो समय की अवधि में पूँजी भण्डार में होने वाली वृद्धि को दर्शाता है।

पूँजी => यह एक स्टॉक अवधारणा है जो किसी विशिष्ट तिथि पर संक्षिप्त कुल परिसंपत्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

उत्तर 25

विदेशी विनिमय बाजार :⇒

विदेशी मुद्रा बाजार मुद्रा के व्यापार के लिए एक वैश्वीकृत केन्द्रीकृत बाजार है। प्रमुख प्रतिभागीयों में वाणिज्य बैंक और विदेशी मुद्रा दलाल शामिल हैं।

विदेशी मुद्रा बाजार वह स्थान है जहाँ राष्ट्रीय मुद्राओं का व्यापार या विनिमय किया जाता है। इसका प्राथमिक कार्य एक मुद्रा को दूसरी मुद्रा में परिवर्तित करने की सुविधा प्रदान करके अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश को सुगम बनाना है।

इस बाजार के प्रमुख प्रतिभागीयों में निम्न लिखित शामिल हैं:⇒

वाणिज्य बैंक :⇒ यह सबसे बड़े भागीदार हैं। जो अपने लिए अपने ग्राहकों की ओर से भारी मात्रा में मुद्रा का व्यापार करता है।

[redacted] विदेशी मुद्रा दलाल

ये खरीददारों और विक्रेताओं के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं जिससे बाजार में लेन देन सुगम होता है।

उत्तर 27

गुणक :⇒ गुणक निवेश में होने वाले परिवर्तन के कारण आय में होने वाला परिवर्तन है। $K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$

अर्थशास्त्र में गुणक एक आर्थिक कारक है जो यह मापता है कि सरकारी खर्च या निवेश जैसे - स्वायत्ता व्यय में प्रारंभिक परिवर्तन राष्ट्रीय आय या सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P) में कितना अधिक परिवर्तन करते हैं।

यह दर्शाता है कि अर्थशास्त्र में धन का प्रवाह कैसे आय में कई गुना वृद्धि करता है।

गणना :⇒ गुणांक (K) = की गणना MPC या MPS के आधार पर की जाती है।

$$K = \frac{1}{1-MPC} \Big/ or \ \frac{1}{MPS}$$

उदाहरण : यदि किसी अर्थव्यवस्था में MPC 0.8 है तो गुणांक की गणना इस प्रकार होगी।

~~K = 1~~

$$K = \frac{1}{1-0.8} = \frac{1}{0.2} = 5$$

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल) | इण्टरमीडिएट परीक्षा 'ब' (उत्तराखण्ड) 06 पन्ने

इसका मतलब है कि निवेश या सरकारी खर्च में प्रत्येक ₹ की वृद्धि से कुल राष्ट्रीय आय में 5 ₹ की वृद्धि होगी।

अतः स्पष्ट है कि गुणक निवेश अथवा विनियोग में होने वाले परिवर्तन के ~~आय~~ कारण आय में होने वाला परिवर्तन है।

विनियोग में प्राथमिक वृद्धि तथा आय में अंतिम वृद्धि गुणक कहलाती है।

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

उत्तर 28

(i) जब बजटीय घाटे के लिए वित्त पोषण कर वसूलकर अथवा जनता पर कर लगाया जाता है उसे करारोपण कहते हैं।

(ii) सरकार प्रायः ऋण ग्रहण पर आश्रित होती है जिसे सरकारी ऋण कहते हैं।

(iii) यदि सरकार का ऋण ग्रहण एक वर्ष के बाद दूसरे वर्ष भी जारी रहता है तो इससे ऋण का संचय होता है और इसे ऋण संचय कहते हैं।

(iv) बजटीय घाटा = सरकारी व्यय - सरकारी आय

(v) प्राथमिक घाटा